बरेली जनपद के महाविद्यालयों में शिक्षक–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अन्तर्गत इण्टरर्नशिप के महत्व का अध्ययन

अमन कृष्ण
एम.एड.,
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

सारांश

शिक्षा व्यक्ति के लिए शिक्षक के रूप में आर्थिक और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षकों से शेक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण उत्पादन प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षक बनना एक ऐसा पेशा है जो किसी भी ज्ञान को प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षण दुनिया में सबसे चुनौतीपूर्ण व्यवसायों में से एक है। शिक्षण के इण्टरर्नशिप में सहयोग सुयोग्य पर्यवेक्षक के मार्गदर्शन में अभ्यास शिक्षण और क्षेत्र के अनुभव को विविधता भी शामिल है। इस अवधि में शिक्षार्थी अपने सैद्धान्तिक समझ जो उसने शिक्षण कक्षाओं के माध्यम से हासिल की है। इन्टरर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम अपने वृहद उपदेशों और प्रारूपों के रखने के बावजूद भी उसकी पूर्ति करने में बाधा महसूस कर रहा है। इस कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण से सम्बन्धित जिन गुणों का विकास होना वह नहीं हो पा रहा है। शिक्षक प्रशिक्षुओं को अनेक प्रकार की घटनाओं एवं समस्या का सामना करना पड़ता है।

मूलशब्द : *शिक्षक प्रशिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम, इण्टरर्नशिप*

1. प्रस्तावना

शिक्षक में इस बात की नितांत आवश्यकता होती है कि शिक्षक अपनी व्यवसाय पहचान को मजबूत करें एवं अपनी अस्मिता को पहचाने। स्कूलों में शिक्षकों के निष्पादन के सन्दर्भ में एक शिक्षक बनने की तैयारी और उसकी व्यवसायिक विकास बहुत ही महत्वपूर्ण है, ऐसे में शिक्षक कार्यक्रमों से यह अपेक्षा है कि वह ऐसे पेशेवर शिक्षक तैयार करें। जिनके द्वारा शैक्षिक व्यवस्था मजबूत हो सके। शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा के बारे में किसी ने कहा है,

''चलो जलाएँ दीप वहाँ, जहाँ अभी भी अंधेरा है।
शिक्षा पाकर षिक्षा मांगे, युवजन खाए ठोकर आस।
आजादी का स्वप्न दिखाकर, पाखंडी करते हैं राज।
भ्रष्ट व्यवस्था ने भी डाला, अब यहाँ डेरा है।
चलो जलाएं दीप वहाँ जहाँ अभी भी अंधेरा हैं।''

जब हम शिक्षक–शिक्षा की बात करते हैं तो उसे कई आयामों के द्वारा समझते हैं। शिक्षा व्यवसाय की प्राथमिकता नहीं है, ऐसे में इस व्यवसाय में प्रवेश करने में प्रवेश करने वालों की तैयारी बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। जिसमें सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण भी शामिल होता है, परन्तु चिन्ताजनक यह है कि जिस तरह यह प्रक्रिया चल रही है उस पर प्रश्नचिन्ह लगाना स्वाभाविक है।

शिक्षा आयोग 1964–1966 में शिक्षक शिक्षा को पेशावर बनाने समेकित कार्यक्रम का विकास करने एवं इण्टरर्नशिप प्रशिक्षण की सिफारिश की। शिक्षक शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र। चट्टोपाध्याय आयोग 1983–1985 ने कहा यदि स्कूलों शिक्षकों से उम्मीद की जाती है कि वे पढ़ाने के उपागम में क्रान्ति लाए व क्रान्ति पहले शिक्षा के कॉलेजों में होनी चाहिए। शिक्षक शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह आधार पत्र। यशपाल समिति की रिपोर्ट शिक्षा बिना बोझा के 1993 के अनुसार शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की कमी के कारण स्कूलों में शिक्षण की गुणवत्ता असंतोषजनक रही है। स्कूली शिक्षा में हुए परिवर्तनों के सन्दर्भ में इस कार्यक्रम की प्रासंगिकता को सुनिश्चित करने के लिए इसकी विषय वस्तु का पुनः निर्माण किया जाए। इन कार्यक्रमों में इस बात पर जो दिया जाना चाहिए प्रशिक्षणार्थी आधोगम तथा स्वचिन्तन योग्यता प्राप्त कर सके। योग्य शिक्षकों को इसी गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए शिक्षा प्रणाली द्वारा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद जैसी एक संस्था निर्मित की गई है। जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का निर्माण होता रहता है।

2.समस्या कथन

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा **''बरेली जनपद के महाविद्यालयों में शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अन्तर्गत इण्टरर्नशिप के महत्व का अध्ययन''**

3.अध्ययन के उद्देश्य

किसी कार्य को पूरा करने के लिए कोई न कोई उद्देश्य जरूर होता है, उद्देश्यों का निर्धारण किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए अति आवश्यक है।

1.शिक्षक प्रशिक्षण के अन्तर्गत बी.एड. प्रशिक्षुओं का इण्टरर्नशिप का महत्व।
2.शिक्षक प्रशिक्षण के अन्तर्गत बी.टी.सी. प्रशिक्षुओं का इण्टरर्नशिप का महत्व।
3.शिक्षक प्रशिक्षण के अन्तर्गत एम.एड. प्रशिक्षुओं का इण्टरर्नशिप का महत्व।

4. तकनीकी शब्दों का अर्थ

शिक्षक–शिक्षा देने वाले को शिक्षक, गुरू या अध्यापक कहते हैं।
प्रशिक्षण–किसी दिए गए कार्य को उचित ढंग से सम्पादित करने के लिए किसी व्यक्ति विशेष के दृष्टिकोण अभिवृत्ति ज्ञान कौशल एवं व्यवहार के क्रम विकास का नाम ही प्रशिक्षण है।
इण्टरर्नशिप कार्यक्रम–यह कार्यक्रम सार्थक कौशलों का विकास करने के साथ–साथ विद्यार्थियों में सम्बन्धित व्यवसाय के प्रति संवेदनशीलता एवं विशिष्ट अभिवृत्ति का विकास करता है।
शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम–इसके अन्तर्गत किसी भी शिक्षक को शिक्षक बनने से पहले जो योग्यता पूरी करनी होती है उसको शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम कहते हैं।

5.परिकल्पनाएँ

1. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत बी.एड. इण्टरर्नशिप का कोई सार्थक लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पा रहा है।
2. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत एम.एड. इण्टरर्नशिप के छात्रों का कोई सार्थक लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

6.अध्ययन का परिसीमांकन

1.अध्ययन का क्षेत्र जनपद बरेली के महाविद्यालयों को ही रखा गया है।
2.प्रस्तुत अध्ययन में जनपद बरेली के महाविद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षुओं में 1000 का ही चयन न्यादर्श के रूप में ही किया गया है।

3.प्रस्तुत अध्ययन में जनपद बरेली के महाविद्यालयों के बी.एड., एम.एड. के छात्रों को यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है।

7.सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

मानव ईश्वर द्वारा रचित कृतियों में श्रेष्ठम है, क्योंकि उसके अन्दर वह क्षमता है कि वह अपने एकत्रित ज्ञान से लाभ उठा सके।

8.शोध कार्य की विधि

शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण या वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

9.अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली के समस्त महाविद्यालयों को जिनमें बी.एड., एम.एड. आदि शिक्षक प्रशिक्षण डिग्री प्रदान की जाती है।

10.प्रतिदर्श

शोधकर्ता ने शोध के लिए प्रतिदर्श का आकार 1000 बी.एड., एम.एड. छात्रों को ही रखा गया है।

11.निष्कर्ष

समग्र अवलोकन उपरान्त यह पक्ष उभरकर निकला है कि इण्टरर्नशिप की मूल अवधारणा को उस रूप में नहीं लिया गया है जैसे कि इसे संकल्पित किया गया है। जो पाठ योजना की आलोचनात्मक पाठ योजना, फाइनल पाठ योजना, एक्शन रिसर्च, सूक्ष्म शिक्षण योजना प्रशिक्षुओं द्वारा किये गये कार्यों का प्रदर्शन, समुदाय भ्रमण तक ही सीमित है। शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में इण्टरर्नशिप की अवधारणा महत्वपूर्ण है पर उसे उस विचार के साथ अमल में नहीं लाया गया जहाँ भी प्री इण्टरर्नशिप की अवधि में प्रशिक्षण से अपेक्षा थी वे स्कूलों में जाकर अवलोकन करना और स्वयं के लिए कक्षा के लिए तेयार करना वहाँ उस अवधि में भी प्रशिक्षुक औपचारिक पाठ योजना बनाकर टीचिंग करना। विभिन्न तरह के विद्यालयों के अनुभव लेने से लेकर भी किसी तरह के बदलाव देखने को नहीं मिलते। प्रशिक्षण इण्टरर्नशिप से लेकर विश्वविद्यालय और विद्यालय संवाद की कमी पायी जाती है। सम्बन्धित संस्थानों के द्वारा स्कूलों की इण्टरनर्शिप अवधारणा को पर्याप्त रूप से साझा नहीं किया गया और ठकी प्रकार से मॉनेटिंग न मिलने के कारण छात्र वास्तविक रूप से वो नहीं सीख पाए जिसकी उन्हें आवश्यकता है। वहीं पर गैर सरकारी विद्यालय और सरकारी विद्यालयों के बीच की खायी भी महसूस किया जा सकता है। सरकारी शिक्षण संस्थानों में अभी भी कुछ व्यवस्थाओं को लागू करते हुए पाया जा रहा है, जबकि गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों में कदाचार का बोलबाला है। इस प्रकार शिक्षक कार्यक्रम में सीखने सिखाने की प्रक्रिया रोज तक सीमित है।

12.सुझाव

1. प्रस्तुत अध्ययन जनपद बरेली के महाविद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षण को ही लिया गया है, जबकि आगे है यह अन्य व्यवसायिक पाठ्यक्रमों पर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन जनपद बरेली के महाविद्यालयों में संचालित ए.एन.एम, जी.एन.एम, बी.ए.एम.एस., एम.बी.बी.एस. में इण्टरर्नशिप पर भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन जनपद बरेली के महाविद्यालयों में संचालित एल.एल.बी, एम.बी.ए. आदि संचालित कोर्सो में इण्टरर्नशिप पर भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, डॉ. दिनेश, अध्यापक शिक्षा प्रकाशन लबली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय।
2. कुमार, डॉ. दिनेश, शिक्षक में इण्टरर्नशिप का मूल्यांकन लबली प्रोफेसनल विश्वविद्यालय।
3. कुमार, डॉ. दिनेश, शिक्षण में इण्टरर्नशिप संगठन पर्यवेक्षण प्रकाशक लबली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय।
4. शर्मा, डॉ. एन.के. अध्यापक शिक्षा–एस. क. पब्लिशर्स, नई दिल्ली।